Volume-6, No. 2 Aug.-2019, pp. Hin.44-46

डॉ. सरोजनी कुलश्रेष्ठ के कहानी–साहित्य के तथ्य और शिल्प की मीमांसा

डा. ममता रानी
(टी.जी.टी. हिन्दी)
जे. पी. विद्या मन्दिर, अनूपशहर, बुलन्दशहर (उ0प्र0) भारत।

मानव जीवन से कहानी जितनी जुड़ी है, उतनी अन्य कोई विधा नही जुड़ी है। रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार– ''जिस प्रकार गीत गान और सुनना मनुष्य के स्वभाव के अन्तर्गत है उसी प्रकार कथा–कहानी कहना और सुनना भी। कहानियों का चलन सभ्य असभ्य सभी जातियों में चला आ रहा है। सब जगह उसका समावेश शिल्प साहित्य के भीतर हुआ है।''

1. इससे कहानी की व्यापकता का पता चलता है।डॉ सरोजनी कुलश्रेष्ठ की कहानियां उनकी अपनी अनुभूतियों और युगीन यर्थात के ताने–बाने से बुनी हुई हैं। उनकी कहानियों के कथ्य और शिल्प की मीमांसा के लिए अनेक कहानी–साहित्य की कृतियों के क्रम से चलना होगा–

1. चॉदी की पायल संग्रह का कथ्य–

डॉ कुलश्रेष्ठ की इक्कीस कहानियां संग्रहीत है। सभी कहानियां नारी जीवन से सम्बन्धित है। समाज द्वारा प्रताड़ित एवं पीड़ितऐसी ही नारियों की व्यथा कथा इन कहांनियों में है–चाहे वह सूरज नाम की जमादारिन हो अथवा 'भटकती लौ' की ब्राह्व नायिका।''2 इस कथन से स्पष्ट हो जाता है कि 'चॉदी की पायल कहानी संग्रह की कहानियों का मूल कथ्य नारी की वेदना है जिसके अलग–अलग रूप है। पति–पत्नी के सम्बंधों का विघटनपत्नी के लिए घोर पीड़ा का स्रोत बन जाता है। ''पति–पत्नी के सम्बन्धों में दूसरे सम्बन्धों की अपेक्षा अधिक बदलाव आया है। इस बदलाव का सबसे बड़ा कारण स्वतन्त्रता के पाश्चात् स्त्री का आर्थिक रूप से निर्भर होना है।3

यह स्थिति डॉ. सरोजनी कुलश्रेश्ठ की कहानियों में भी है। 'सीढियों पर' कहानी का अंश– इनकी मेम साहब को मै जानता हूँ पर उनके साथ कम ही आते है। आज एक महिला को अपने साहब के साथ देखकर आश्चर्य ही हुआ।'' इस महिला से लगाव मेम साहब (पत्नी) को पीड़ा पहुॅचाना ही है।

चॉदी की पायल के कथ्य बिन्दू इस प्रकार है–

क. नारी प्रताड़ना
ख. नारी परित्याग
ग. भ्रूण हत्या
घ. मूर्तिपूजा और उसका विरोध
ड़ दहेज समस्या
च. अविवाहित नारी जीवन
छ. पंचायत की भूमिका
ज. बहुपत्नी की स्थिति
झ. आस्थावादिता
ञ. प्रेम
ट. पति को त्यागना, प्रेम विवाह करना
ठ. चापलूसी
ड. राष्ट्रीय भावना

'चांदी की पायल' की कहानियों का शिल्प–

कहानी निबंध नही है, क्योंकि उसमें व्यापक माननीय यत्यों का अन्वेषण या उद्घाटन होता है, केवल तथ्यपरक अभिधामूलक सत्यों का नही।नमिल सिंह के अनुसार नारी ''पुरूष प्रधान समाज की अहमन्यता का बराबर शिकार रही है।लेकिन आधुनिक शिक्षा जाग्रति की भावना में नारी का सामाजिक विप्रूपता तथाविसंगतियों के विरूद्ध लड़ाई की शक्ति प्रदान करते हुए नारी जिजीविशा संघर्श और संवेदना का नया आयाम प्रदान किया है। डॉ सरोजनी कुलश्रेष्ठ की कहानियां भी इस आयाम में अपनी भूमिका निभाती हैं।

क–''वह कदम्ब का वृक्षउनके प्रेम का मूक साक्षी था निर्माल्य ने वसुणा को पहली बार इसकी छाया में खड़े देखा था। सादा श्वेत साड़ी में उसका सौन्दर्य झील में खिले कमल सा प्रतीत हुआ।

कपास के फूल– कपास के फूल में 22 कहानी संग्रहीत है।

अनाम कहानी का एक अंश– उसके इस प्रकार भागने का कोई कारण समझ में नही आया।

एकमहिला से पूछा तोउसने बताया किवह तो कॉल गर्ल है। मैं चौक पड़ी। जिस रूप में वह मेरे ऑफिस में आयी थी, बड़ी सीधी सादी लड़की मालूम हो रही थी

25बाल विवाह– ''सरायवाली चाची जब ब्याहकर इस घर में आई थी तो सात बरस की थी। चाचा भी बस नौ ही बरस के थे। वे खेलते लड़ते और मेल–मिलाप करते रहते थे। इनमें बाल विवाह एक समस्या हैं

'कपास के फूल' की कहानियों का शिल्प विधान– एक ही कहानीकार के दो कहानी–संग्रहों की कहानियों के शिल्प की मीमांसा यदि अलग–अलग की जाए तो उसमें विशेष अंतर की सम्भावना नही रहती।

चॉदी की पायल में तीन शैलियां प्रमुख है– आख्यात्मक शैली, आत्मकथात्मक शैली, और नाटकीय शैली। कपास के फूल संग्रह की कहानियों में भी इन्ही तीन शैलियों की प्रमुखता है।

आख्यातमक शैली का एक रूप–

''मै अपने सुख में मग्न थी। सुन्दर स्वस्थ और सुशील पति। वह भी उच्च पदस्थ राज्य सरकार में सचिव। मुझे अपने परिवार को छोड़कर और किसी की चिन्ता नही थी ।''

कथोपकथन की नाटकीय शैली में –

''ओ ओ बतसिया! आयकें देखि जि का हैगयो।'' का भयो चाचा? तुम हारि गये हसे। आओ बैठ जाओ नेंक देर। इसमें आंचलिकता उभर रही है।

ब्रज की लोक कथाएं– डॉ सरोजनी कुलश्रेष्ठ का एक ऐसा कथासंग्रह है। जिसमें अलिवित परन्तु लोक में प्रचलित कुछ कहानियों को नये ढंग से संयोजित कर प्रस्तुत किया है– इस कृति में ग्यारह कहानियां है।

ब्रज की लोक कथाओं का कथ्य–

क–झूठ अभिमान– 'जब बन्दर राजा बना' कहानी में बन्दर को प्रतीक बनाकर झूठे अभिमान का रूपायन किया गया है।

'सोने को रे सोने को चबूतरा
कोई चन्दन लीया होय।
कानों में गज मोती पहने
राजा बैठा होय।

ख– त्वरित बुद्धि– बन्दर लोमड़ी से चार पंक्तियां गाने को कहता है,तो वह कहती है–''नही जेठ जी ! मुझे तो बड़े जोर की प्यास लगी है। पहले पानी पीलूँ फिर जो कहोगे कर दूंगी।

ग– बुद्धि का उपयोग और विश्वास– 'मोती का रायता' कहानी में माली अपनी बुद्धि का सही उपयोग करता है। एक राजा की रानी के पुत्र हुआ तो उसकी सास ने उस नवजात पुत्र को बाग में फिकवा दिया था क्योंकि वह अंधविश्वासी थी और पंण्डितों ने बताया कि वह अशुभ घड़ी में पैदा हुआ है। माली उस बालक को बडा करता हैऔर राजा को भोजन पर बुलाता है तो 'मोती का रायता' परोसता है। राजा ने पूछा मोती का रायता हाकता है क्या? माली कहता है– अगर एक रानी केकड़–पत्थर को जन्म दे सकती है तो मोती का रायता क्यों नही बन सकता'' राजा रहस्य समझ जाता है ।और माली उस लड़के को राजा को सौप देता है।

ब्रज की लोक कथाओं को शिल्प–शैली की द्रष्टि से इस कृति की कहानियां 'एक राजा था'की प्रकृति की एतिहासिक शैली में हैं। इनमें सामान्य कहानियों की तुलना में कथोपकथन बहुत कम है। इनमें वाक्य छोटे–छोटे हैं। यथा– एक राजा था उसके कोई पुत्र न था। केवल एक लड़की थी । राजा अपनी इस लड़की को बहुत प्यार करते थे। इसमें भाषाई गतिशीलता बढी है।

दस प्रेरक बाल कहानियों का शिल्प– 'दस प्रेरक बाल–कहानियों में' अपनी बात शीर्शक से डॉ सरोजनी कुलश्रेष्ठ ने कहा है कि– ''बच्चे कहानी बहुत पसंद करते है। अपनी दादी और नानी से वे कहानी सुनंने का आग्रह करते है। राजा – रानी की कहानी, पक्षियों की कहानी, वीरता की कहानी तथा रहस्यमय कहानियां भी बच्चों को बहुत प्रिय होती है।

डॉ. सरोजनी कुलश्रेष्ठ ने अनेक स्थानों पर उपमा रूपक जैसे अलंकारो का प्रयोग किया है। यद्यपि अलंकार कहानी के लिए कविता की तरह आवश्यक या उपयोगी नही होते फिर भी उसमें अभिव्यक्ति में आकर्षण तो उत्पन्न हो ही जाता है।

यथा– उनमें लाल नाम की अॅगूठे के बराबर नाप की रंगीन चिड़ियों को देखकर तो बहुत खुश हुआ और बोला पापा देखो ऐसा लगता है कि जैसे इन लाल मुनियों को रंग में डुबोकर निकाल लिया गया है। और दूसरी कुछ ऐसी है, कि जैसे होली के रंगघोलकर उनके छींटे इस पर मार दिए गये हो। इस कथन में दो उदाहरण अलंकार के है। जो कहानी को एक नई छवि प्रदान करते है।

अन्य कृतियों की कहानियों में कथोपकथन नाटकीय शैली में भी दिया गया है परन्तु इस कृति की कहानियों में नाम मात्र का है।

एक अंश– ''काम तो मै सभी तरह के कर सकती हूँ। आप काम बताइये तो।''
''कहॉ रहती है? और हॉ, तूने अपना नाम नही बताया''
''मै यहॉ पास के नगले की लड़की हूँ। मेरा नाम बबीता है।
पुरू बोला–दीदी! आज तो किसी पशु या पक्षी की कहानी सुनेंगे।
''ठीक है नानी को आने दो । उनसे ऐसी ही कहानी सुनाने को कहेंगे। अंकिता ने कहा।''
इस कथोपकथन में वक्ता के साथ अंकिता कहने लगी 'पुरू बोला' और अंकिता ने कहा 'जैसे अंश कथन में अतिरिक्त हैं अतः इसमें नाटकीय प्रवृति नही है।

इस कृति की कुछ कहानियां अत्यन्त साधारण सी घटना को लेकर बुनी गई हैं। दुरंगी चप्पलें कहानी ऐसी ही है। दो लड़को की चप्पलें एक संगीत सम्मेलन के समय बदल जाती हैं और फिर मिल जाती है। इतनी सी बात को षिल्प के बल पर एक रोचक और शिक्षाप्रद कहानी के रूप में प्रस्तुत कर दिया है। शिल्प से ही कहानी में कलात्मकता आती है और दस प्रेरक बाल–कहानियों की कहानियां शिल्प के विविध रूप स्थान–स्थान पर प्रदर्षित करती हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. शुक्ल रामचन्द्र हिन्दी साहित्य का इतिहास
2. कुलश्रेश्ठ डॉ. सरोजनी चॉदी की पायल, पृष्ठ– 274
3. सिंह जगन आधुनिकता और हिन्दी कहानी, पृष्ठ– 46
4. कुलश्रेष्ठ डॉ. सरोजनी चॉदी की पायल, पृष्ठ– 9
5. वर्मा धीरेन्द्र हिन्दी साहित्यकोष भाग 1, पृष्ठ–181
6. सिंह नमिता कर्फ्यू पृष्ठ –भूमिका
7. कुलश्रेष्ठ डॉ. सरोजनी चॉदी की पायल, पृष्ठ– 55 (कहानी मनमाही)
8. कुलश्रेष्ठ डॉ.सरोजनी चॉदी की पायल, पृष्ठ–66 (दस बीस/कहानी–प्रतीक्षा)
9. कुलश्रेष्ठ डॉ.सरोजनी कपास के फूल, पृष्ठ– 91
10. कुलश्रेष्ठ डॉ.सरोजनी कपास के फूल पृष्ठ– 16
11. कुलश्रेष्ठ डॉ.सरोजनी कपास के फूल, पृष्ठ– 74(कहानी सखी)
12. कुलश्रेष्ठ डॉ.सरोजनी ब्रज की लोक कथाएं, पृष्ठ– 1
13. कुलश्रेष्ठ डॉ.सरोजनी ब्रज की लोक कथाएं, पृष्ठ– 3
14. कुलश्रेष्ठ डॉ.सरोजनी ब्रज की लोक कथाएं, पृष्ठ– 5
15. कुलश्रेष्ठ डॉ.सरोजनी ब्रज की लोक कथाएं, पृष्ठ– 9
16. कुलश्रेष्ठ डॉ.सरोजनी दस प्रेरक बालकहानियां, पृष्ठ– 3
17. कुलश्रेष्ठ डॉ.सरोजनी दस प्रेरक बालकहानियां, पृष्ठ– 5